सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ का काव्य

डॉ आशा मीणा
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग
मानविकी एवं भाषा संकाय
महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी, बिहार
Email: ashameena@mgcub.ac.in

सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ का काव्य

- सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ का सामान्य परिचय
- कृतियाँ
- निराला के काव्य में प्रगति चेतना
- निष्कर्ष
- संदर्भ

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला ' सामान्य परिचय-

- जन्म –21 फरवरी 1896 मेदिनीपुर जिले के महिषादल में
- मृत्यु - 15 अक्टूबर 1961
- हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों मे से एक महत्वपूर्ण स्तंभ है ।
- उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध आदि विधाओं की रचना की है ।
- 'समन्वय' एवं 'मतवाला' पत्र में संपादक का कार्य किया है ।

कृतियाँ –

काव्य संग्रह –

1. अनामिका (1923)
2. परिमल (1930)
3. गीतिका (1936)
4. अनामिका (द्वितीय भाग में 'राम की शक्ति पूजा' और 'सरोज स्मृति') 1936
5. तुलसीदास (1939)
6. कुकुरमुत्ता (1942)
7. अणिमा (1943)

8. बेला (1946)
9. नए पत्ते (1946)
10. अर्चना (1950)
11. आराधना (1953)
12. गीत कुंज (1954)
13. सांध्य काकली
14. अपरा संचयन

कहानी –

i. लिली (1934)
ii. सखी (1935)
iii. सुकुल की बीवी (1941)
iv. चतुरी चमार (1945)
v. देवी (1948)

उपन्यास –

I. अप्सरा (1931)
II. अलका(1933)
III. प्रभावती (1936)
IV. निरूपमा (1936)
V. कुल्ली भाट(1938-39)
VI. बिल्लेसुर बकरिहा (1942)
VII. चोटी की पकड़ (1946)
VIII. काले करनामें (1950)
IX. चमेली (अपूर्ण)

निबंध – आलोचना -

i. रवीन्द्र कविता कानन (1929)
ii. प्रबंध पद्य(1934)
iii. प्रबंध प्रतिमा (1940)
iv. चाबुक (1942)
v. चयन (1957)
vi. संग्रह (1963)

- रचनावली – निराला की रचनावली 8 खंडों में।
- पुराण कथा और बाल साहित्य ।

निराला के काव्य में प्रगति चेतना –

- सन् 1935 में प्रगतिशील आंदोलन भारत में आरंभ हुआ
- हिन्दी साहित्य के प्रगतिवादी आंदोलन ने राष्ट्र को स्वस्थ सामाजिक चेतना प्रदान की ।
- इस साहित्य में मानव को संघर्ष करते हुए यथार्थ रूप में प्रदर्शित किया गया है ।
- निराला विद्रोही स्वभाव के कवि रहे हैं ।
- उनकी दृष्टि प्रत्येक दिशा में नवीन आधारों की सृष्टि करती आई है ।
- उनके कवि में सामाजिक जीवन के वैषम्यॉ के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त हुई, उसे ही उनका प्रगतिशील काव्य कहा जा सकता है ।

- निराला की प्रगतिशील कविताओं में समाज की विषम अवस्था का चित्रण किया गया है
- उन्होने जातीय मतभेदों, अंधविश्वासों, छल–कपट, स्वार्थ, दरिद्रता, चारित्रिक दोष आदि को अपने काव्य का विषय बनाया है
- निराला के प्रगतिशील काव्य का प्रारम्भ ‘रुपाभ’ के प्रकाशन से हुआ ।
- ‘रुपाभ’ का सम्पादन सुमित्रानंदन पंत करते थे ।

निराला के काव्य में प्रगति चेतना का स्वरूप –

1. यथार्थवाद का स्वर-

- निराला के काव्य में कल्पना के स्थान पर यथार्थवाद का स्वर सुनाई देता है ।
- उनकी 'दान' कविता मे सामाजिक यथार्थ का चित्रण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है –

"द्विज राम भक्त,
बीएचकेटी की आशा
भजते शिव को बारहों मास
कर रामायण का परायण,
जपते हैं श्री मन्नारायण।"

2. सामाजिक समस्याओं के प्रति सचेष्टता –

- इनके काव्य मे सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता का स्वर सुनाई देता है –

"जारी रहेगी ,यदि इसी तरह आपस में
उच्च जातियों की घृणा, द्वंद्व कलह वैमनस्य
स्वप्न सा विलीन हो जाएगा अस्तित्त्व सब
दूसरी तरंग कोई फिर फैलेगी ।"

3. सामाजिक प्रगतिशीलता का भाव –

"भेद कुल खुल जाय वह
सूरत हमारे दिल में है
देश को मिल जाय वो
पूंजी तुमरे मिल में है ।"

5. साम्यवादी दृष्टिकोण –

- निराला के काव्य में सामाजिक व्यवस्था और आर्थिक समस्या को साम्यवादी करंट के आदर्श में प्रस्तुत किया है ।
- जिससे दीन-हीनों और किसानों के महत्व की स्थापना, जाति-पांति, छुआ–छूत की समाप्ति तथा संपत्ति का राष्ट्रीयकरण आदि समस्याओं को उठाया जा सके –

"यहाँ कभी मत आना
उत्पीड़न का राज्य दुख ही दुख
यहाँ है सदा उठाना ,
क्रूर यहाँ पर कहलाते है शूर
और हृदय का शूर सदा ही दुर्बल क्रूर ,
स्वार्थ सदा रहता परार्थ से दूर ।"

6. नारी स्वांतत्र्य की पुकार –

- निराला के काव्य में नारी के प्रति 'श्रद्धा का भाव रखते है ।
- इलाहाबाद जैसे शहर की भूमिका में पत्थर तोड़ती हुई गरीब की दशा का वर्णन करते हुए उसके आर्थिक अभाव को व्यक्त करते है-

"वह तोड़ती पत्थर
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर ,
वह तोड़ती पत्थर।"

7. सांस्कृतिक समन्वय की भावना –

"यही जग जीवन के दिन-रात
यही मेरा ,इंका ,उनका। सबका स्पंदन
हस्य से मिला हुआ क्रंदन
यही मेरा ,इंका ,उनका। सबका स्पंदन। "

8. राष्ट्रीय भावना –

" कट अंध उर के बंधन स्तर,
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष भेद तम हर प्रकाश भर,
जगमग जग कर दे ।"

9. मानव की महत्ता का प्रकाशन –

- निराला मानव समाज उन्नयन के लिए ईश्वर से प्रार्थना भी करते है –

"दलित जन पर करो करुणा,
दीनता पर उतर आए
प्रभु तुम्हारी शक्ति अरुणा ।"

10. भाषा की प्रगतिशीलता –

- निराला के प्रगतिशील भाषा सामान्य जन की रही है ।
- भावानुरूप भाषा के सिद्धांत मर्म को जानने वाले निराला के लिए यह स्वाभाविक ही था कि वे हास्य –व्यंग्य विनोद शैली को अपनाते हुए अपनी बात कह देते हैं –

“अबे सुन बे गुलाब,
भूल मत, अगर पाई खुशबू, रंगों आब,
खून चूसा, खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतरा रहा कैपिटलिस्ट ।”

निष्कर्ष –

- निराला भारतीय नवजागरण के जागरूक कवि है ।
- निराला का प्रगतिवाद सामाजिक विविधता का सजीव व्यंग्य रूप है ।
- हिन्दी के प्रगतिवादी कवियों में निराला का स्थान शीर्षस्थ है ।
- क्योंकि उनमें राष्ट्रोत्थान, नारी जागरण, जातीय गौरव तथा क्रांति के साथ–साथ यथा तथ्य स्थितियों का रूप निर्देश किया गया है ।
- निराला का काव्य उनके विकास शील व्यक्तित्त्व का प्रतिबिंब है
- जिसमें उनकी वैयक्तिक और समाजिकता का विकास प्रबल रहा है ।

संदर्भ –

- विकिपीडिया
- निराला काव्य में सांस्कृतिक चेतना,जगदीश चंद्र माथुर, अभिनव प्रकाशन, दिल्ली ।
- क्रांतिकारी कवि निराला, बच्चन सिंह विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी ।

धन्यवाद